20

कारगिल संघर्ष 1999

कारगिल संघर्ष लद्दाख की ऊँची चोटियों पर लड़ा गया था। इस स्थान की जनसंख्या काफी कम है और यहां विभिन्न भाषीय, धार्मिक और सामाजिक विविधताएँ देखने को मिलती हैं। 1947-1948 में भारत और पाकिस्तान जम्मू व कश्मीर के लिए लड़े थे और यह युद्ध बालिस्तान जिले को बाँटने वाली सीज़फायर लाइन के साथ समाप्त हुआ था। कारगिल जम्मू व कश्मीर के सब डिवीजन लद्दाख का एक हिस्सा है। यह जिला भारतीय सीमा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। भारत व पाकिस्तान इससे पहले 1965 और 1971 में भी युद्ध लड़ चुके हैं। स्वतंत्रता पश्चात् यह चौथा संघर्ष था। इस बार पाकिस्तान के घुसपैठियों ने पहाड़ों की ऊँची चोटियों में कब्जा कर लिया। उनको इन चोटियों से निकालना बेहद जरूरी हो गया था।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात आप:-

- कारगिल की भौगोलिक स्थिति को उजागर कर सकेंगे और संघर्ष की मूल जड़ अथवा सार को स्पष्ट कर पाएँगे;
- भारतीय सेना द्वारा इस युद्ध में किए गए आपरेशनों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय मीडिया की भूमिका और रोष विश्व के दृष्टिकोण पर चर्चा कर पाएँगे;
- कारगिल पुनरीक्षण समिति (Kargil Review Committee) की टिप्पणियों पर चर्चा कर पाएँगे।

20.1 संघर्ष स्थल की भू-आकृति

भू-आकृति से आप क्या समझते हैं?

भू-आकृति से तात्पर्य उस स्थान की भौगोलिक विशेषता है। उदाहरण के लिए भूमि पहाड़ी है या मैदानी है- आदि।

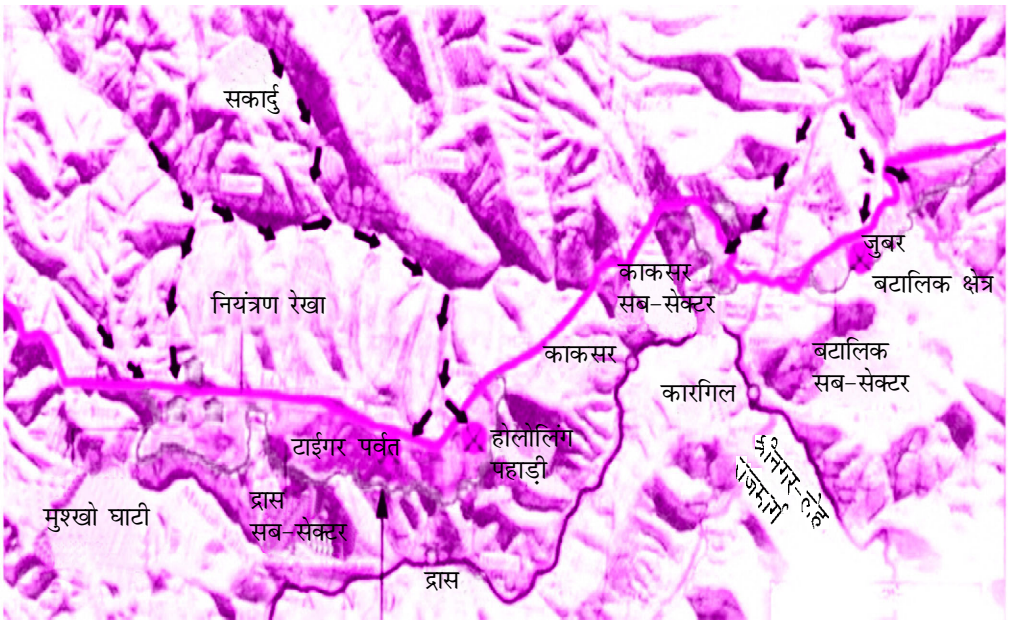

चित्र 20.1 : कारगिल पहाड़ी जहाँ कारगिल संघर्ष हुआ।

उपरोक्त चित्र देखिए और चिन्हित स्थानों को पहचानिए। इसी स्थान को संघर्ष स्थल (Conflict Zone) कहा जाता है। संघर्ष स्थल के अंतर्गत मुश्खो घाटी, द्रास, बटालिक क्षेत्र, काकसर, टोलोलिंग पहाड़ी, टाईगर पर्वत और कारगिल के दक्षिण पश्चिमी और उत्तर पूर्वी स्थान आते हैं। युद्ध नीति के अनुसर ये पहाड़ी रक्षा करने वाली सेना को फायदा देती है और हमला करने वालों के लिए समस्या उत्पन्न करती है। इन पहाड़ियों पर बैठकर एक व्यक्ति कारगिल जिले के द्रास और कारगिल कस्बों को देख सकता है। कारगिल; पाकिस्तान के जिले सर्कादु से 788 किमी. दूर है। कारगिल पहाड़ियों की औसत ऊंचाई 16000 फीट है। यहाँ पर सर्दी में तापमान- 48^0C तक चला जाता है।

पाकिस्तान ने अपनी सेना और अर्द्धसैनिक बलों को प्रशिक्षित कर मुजाहिद्दीन के नाम पर गुपचुप नियंत्रण रेखा (LOC - Line of Control) के पार कारगिल में भेजा। इनका कार्य भारतीय सेना की जासूसी करके जानकारी देना था। यह घुसपैठ उन्होंने 'ऑपरेशन बद्र' के नाम से की थी। उनका मुख्य उद्देश्य भारतीय सेना को सियाचीन ग्लेशियर और लद्दाख क्षेत्र से बाहर निकालकर कश्मीर मुद्दे को वैश्विक बनाकर शीघ्र समाधान प्राप्त करना था।

20.1.1 पृष्ठभूमि

1998 में पाकिस्तान ने अनेक स्थानों मुश्कोम घाटी, द्रास के निकट मारपोला, कारगिल के निकट काकासोर, चोरबाटला सेक्टर तथा सियाचिन क्षेत्र के दक्षिणी सेक्टर टुरटोक पर घुसपैठ करने का प्रयास किया। इसका मुख्य कारण पाकिस्तान द्वारा नियंत्रण रेखा (LOC) में भारतीय चौकियों पर कब्जा करना तथा कारगिल और द्रास जिलों में दबदबा स्थापित करना था।

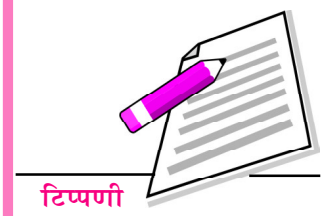

सियाचिन ग्लेशियर और कश्मीर मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाना भी एक उद्देश्य था। दैनिक पैट्रोलिंग करते समय दुश्मन सेना ने बटालिक सेक्टर में कैप्टन सौरभ कालिया के नेतृत्व में पेट्रोलिंग करने वाले दल पर हमला किया।

पाठगत प्रश्न 20.1

1. कारगिल कहाँ पर स्थित है?
2. कारगिल कितनी ऊंचाई पर स्थित है? यहाँ पर सर्दियों में न्यूनतम तापमान कितना रहता है?
3. कारगिल संघर्ष का मूल कारण क्या था?
4. ऑपरेशन अलबद्र में कौन नियंत्रण रेखा (LOC) पार करके आया था?

20.2 ऑपरेशन विजय

कारगिल संघर्ष के मुख्य तीन भाग हैं-

- प्रथम, पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कश्मीर के भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ कर सामरिक महत्व के स्थानों पर कब्जा कर लिया। इससे उन्हें द्रास और कारगिल को जोड़ने वाली सड़क पर तोपखाने से हमला करने की स्थिति और सुविधा प्राप्त हो गई। (देखिए चित्र 20.1) इससे पाकिस्तानी सेना ने कारगिल की पहाड़ी पर कब्जा कर लिया। पाकिस्तान ने इसको आपरेशन अलबद्र का नाम दिया।
- इसके पश्चात् भारतीय सेना ने घुसपैठियों की घुसपैठ का अनुमान लिया और प्रत्युतर के लिए सेना को लामबन्द किया।
- अंतिम स्तर पर भारतीय और पाकिस्तानी सेना ने युद्ध लड़ा। इस युद्ध के परिणामस्वरूप भारत ने पाकिस्तानी सेना द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्र वापिस लेकर तिरंगा फहरा दिया। इसमें पाकिस्तानी सेना को नियंत्रण रेखा (LOC) के पीछे भेजा गया।

  (क) सैन्य दृष्टि से 'ऑपरेशन विजय' एक सीमित संघर्ष था। यह संघर्ष 2 से 3 डिवीजन तक ही सीमित था। इस योजना को छुपाकर रखने के साथ ही पाकिस्तानी सेना ने धोखे और रहस्यमयी परिस्थितियों का सहारा लिया।

  (ख) अन्य ऊँची पहाड़ियों के विपरीत कारगिल पहाड़ियों पर गर्मियों में बर्फ पिघल जाती है। पहाड़ी चोटियों और उनके तलों पर ढीली चट्टाने हैं जिससे चढ़ाई कर पाना बेहद मुश्किल हो जाता है। इससे सेना का आवागमन धीमा, परेशानी वाला और समय बढ़ाने वाला बन जाता है।

(ग) घुसपैठिए कार्यरत सैनिक और प्रशिक्षित हथियार चलाने वाले थे। इनमें से कुछ पाकिस्तानी सेना के NLI (Northern Light Infantry) की तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और 12वीं बटालियन का मिश्रण थे। अन्य कुछ सदस्य मुजाहिद्दीन और पाकिस्तानी स्पेशल सर्विस ग्रुप के सदस्य थे। यह भी अनुमान लगाया गया है कि लगभग 500 से 1000 घुसपैठिए थे। किंतु बाद में घुसपैठियों की अनुमानित संख्या लगभग 5000 निकली।

(घ) इन घुसपैठियों के पास छोटे हथियार (राइफल और मशीनगन) और ग्रेनेड थे। इसके अलाव इनके पास मोर्टार, बंदूक और एंटी एयरक्राफ्ट बंदूकें थी। कुछ चौकियों पर खूब बारूदी सुरंगें बिछा दी गई थीं।

पाठगत प्रश्न 20.2

1. कारगिल संघर्ष से पूर्व पाकिस्तान ने कौन से क्षेत्र अपने कब्जे में कर लिए थे?
2. पाकिस्तानी फौजों को कारगिल से हटाने के लिए भारतीय सेना ने किस नाम से ऑपरेशन चलाया था?

20.2.1 भारतीय सेना के ऑपरेशन

(क) भारतीय सेना ने घुसपैठियों को 3 मई से 12 मई 1999 के मध्य देखा। भारतीय सेना द्वारा रणकौशल का प्रयोग कर घुसपैठियों को भगाने की रणनीति 15 मई से 25 मई 1999 के मध्य बनाई गई। इन गतिविधियों में देश तथा मित्र देशों से खरीदी गई सामग्री, सैन्य ऑपरेशन, सैन्य टुकड़ियों का आवागमन, हथियार तथा आवश्यक सामग्री शामिल थी। 26 मई, 1999 को पाकिस्तानी घुसपैठियायें को भगाने के लिए भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय प्रारंभ किया।

(ख) भारतीय सेना पाकिस्तानी कब्जे वाले क्षेत्र की ओर बढ़ने लगी। भारतीय सेना को हेलिकॉप्टर और हवाई जहाजों से हवाई सुरक्षा मिली हुई थी। किंतु भारतीय वायुसेना एलओसी से आगे जाकर हमला करने की इजाजत नहीं थी। इसका कारण यह था कि हम युद्ध बढ़ाना नहीं चाहते थे। भारत की एक संयुक्त पैदल हथियायर बंद सेना ने आग्नेय हथियारों का सहारा लेकर इन्हें भगाने की योजना बनाई थी।

(ग) लगभग 250 तोपों का प्रयोग करके घुसपैठियों को भगाया गया। बोफोर्स FH-77B फील्ड होवित्जर तोपों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नवीन तरीकों का प्रयोग करके हथियारों की मारक क्षमता बढ़ाई गयी। दोनों पक्षों के बीच जबरदस्त गोलाबारी हुई। 300 तोपों मोटार्र और रॉकेटों का प्रयोग किया गया। दैनिक रूप से लगभग 5000 गोले (Shell), रॉकेट और बम विरोधी सेना पर दागे गए।

(घ) भारतीय सेना ने 155 mm की बोफोर्स मध्यम तोपें और 105 mm बंदूकों का प्रयोग किया तथा शत्रुओं को हमलों में हस्तक्षेप करने से रोके रखा। गोलाबारी इतनी तीव्र थी कि भारतीय सेना को टाइगर पहाड़ी (Hill) पर तथा Point 4875 पर कब्जा 5 जुलाई को तथा मश्कोश घाटी पर 7 जुलाई 1999 को हो पाया। भारतीय सेना ने Point 4875 पहाड़ी को 'गन हिल' (पहाड़ी) का नाम दिया। यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि बंदूक धारियों की बहादुरी और शौर्य के कारण भारतीय सेना द्रास और मश्कोह सेक्टरों को छुड़ा पाई।

(ङ) टाइगर हिल पर हुई गोलाबारी के कारण जानमाल का बहुत नुकसान हुआ। भारतीय सेना ने 122 mm ग्रेनेड मल्टी वैरल रॉकेट (122 mm Erad Multi Barrel Rocket Launchers MBRLs) लांचर का प्रयोग किया। इनका प्रयोग सीधे गोलाबारी के लिए अपनी सुरक्षा को दांव पर लगा कर किया। गोलाबारी की ऐसी कुछ घटनाएँ टी.वी. व कैमरों पर पूरे देश में पहली बार दिखाई गई।

(च) बटालिक सेक्टर में हुए नुकसान के पश्चात् भी भारतीय सेना ने OPs (Operations Pasts) को स्थापित किया गया। भारत की अगली विजय 21 जून को प्वाइंट 5203 और 6 जुलाई को खालूबार को हासिल करने के रूप में आई। भारत द्वारा तोप के उचित प्रयोग से पाकिस्तानी सेना को नुकसान होने लगा। और उनका नैतिक बल कमजोर पड़ गया।

(छ) गोलाबारी ने पाकिस्तानी सेनाओं को बेहद कमजोर कर दिया। उनकी रसद सामग्री और बटालियनों को नुकसान पहुंचाया। कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने 250,000 गोले, बम और रॉकेट प्रयोग किए। दैनिक रूप से भारतीय सेना ने 5000 गोले, मोर्टार बमों और रॉकेटों का प्रयोग किया गया।

20.2.2 भारतीय वायुसेना की भूमिका

भारतीय वायुसेना ने भारतीय पैदल सेना की युद्ध के दौरान मदद करने के लिए 'ऑपरेशन सफेद सागर' प्रारंभ किया। यह भूमिका जलवायु, परिस्थिति, ऊंचाई, सीमित बम और हवाई पट्टियों की कमी के कारण सीमित थी। जैसा कि कारगिल की ऊंचाई समुद्र तल से 16000 से 18,000 फीट है अत: वहां प्रशिक्षित और निपुण पायलटों के साथ विशेष वायुयानों की भी आवश्यकता थी।

मई 27 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट नचिकेता बटालियन क्षेत्र में हमला करने के लिए मिग-27 लेकर उड़े। किन्तु इंजन में आयी समस्या के कारण लापता हुए। स्वकड्रन लीडर अजय आहूजा मिग-21 लेकर उन्हें खोजने के लिए निकले। किंतु पाकिस्तानी जमीन से हवा में मारने वाली मिसाइल (SAM) के शिकार हो गए।

वे जहाज से तो कूद गए किन्तु पाकिस्तान पहुँच गए। कुछ समय बाद पाकिस्तान ने उन्हें लौटा दिया। मिराज 2000 के साथ मिग-29 का भी प्रयोग किया गया था। ये हवाई जहाज आधुनिक हथियार, गोला बारूद और बम फेंकने में महारत रखते हैं। लेजर बम भी फेंके गए जिससे टाइगर हिल के और ढालों पर बने पाकिस्तानी बंकरों को ध्वस्त किया गया। मुंथों ढालों पर हुए मिराज हमले से लगभग 180 पाकिस्तानी सैनिक ढेर हो गए।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. भारतीय सेना को कारगिल में हुई घुसपैठ की जानकारी कब हुई।
2. पाकिस्तानी चौकियों के विरुद्ध भारतीय सेना ने कौन से हथियारों का प्रयोग किया?
3. कारगिल युद्ध में भारतीय वायु सेना ने कौन से वायुयानों का प्रयोग किया?

20.2.3 भारतीय नौसेना की भूमिका

भारतीय नौसेना ने कराची बंदरगाह पर आक्रमण कर उस पर आधिपत्य कर पाकिस्तान की रसद और अन्य आवश्यक सामग्री के आगमन का रास्ता बंद कर दिया। भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना का मुकाबला करने के लिए दो मोर्चों पर लड़ने को तैयार थी। नौसेना मुख्यालय पर यह निर्णय किया गया कि पाकिस्तान को यह युद्ध बड़े स्तर पर ले जाने से रोकने हेतु हर संभव प्रयास किए जाएँगे। 20 मई से भारतीय सेना पाकिस्तान की हर हिमाकत पर जवाब देने में तत्पर रहने लगी। नौसेना और कोस्ट गार्ड समुद्री गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए तैयार किया गया। उत्तरी अरब सागर में रैपिड रिएक्शन मिसाइल बोट (Rapid Reaction Missile Boat) और जहाजी बेड़ों की तैनाती कर दी गई। इनमें मिसाइल हमले, आधुनिक हथियार और पनडुब्बी हमले से निपटने के लिए उचित संसाधन थे।

सी हैरियर हवाई जहाज (Sea Hairier Aircrafts) लंबवत् उड़ सकता है। इसे हवाई पट्टी की आवश्यकता नहीं होती है। ऑपरेशन तलवार में भारत के पूर्वी व पश्चिमी जहाजी बेड़ों ने मिलकर पाकिस्तान जाने वाले अरब सागर के रास्ते बंद कर दिए। बाद में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने बताया कि उनके देश में यदि पूर्ण युद्ध होता तो मात्र 6 दिन का तेल ही बाकी बचा था। इस प्रकार हमारी कराची बंदरगाह को बंद करने वाली नीति सफल रही।

20.2.4 कारगिल युद्ध में अमेरिकी हस्तक्षेप

युद्ध प्रारंभ होने की स्थिति में पाकिस्तान ने अमेरिका से शांति व सुलह कराने के लिए मदद मांगी। 18 जून को जी-8 (G-8) समूह के देशों के सम्मेलन में विश्व के बढ़ते औद्योगिक राष्ट्रों ने पाकिस्तान से नियंत्रण रेखा पर आक्रमण न कर भारत से बातचीत की पहल करने की अपील की। यह सम्मेलन जर्मनी के कोलोंग में हुआ था। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन

ने हस्तक्षेप करने से मना कर दिया। उनका कहना था कि जब तक पाकिस्तानी सेना पूरी तरह से भारत की नियंत्रण रेखा से पीछे नहीं हो जाती, वे शांति की अपील नहीं करेंगे। 4 जुलाई को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने अपनी सेना नियंत्रण रेखा से पीछे कर ली। इस प्रकार यह संघर्ष कुछ कम हुआ। हालांकि कुछ फौजें अभी भी नियंत्रण रेखा पर डटी हुई थी। संयुक्त जिहाद परिषद (United Jihad Council) ने पाकिस्तान के इस फैसले की निंदा करते हुए, आजादी की लड़ाई स्वयं अकेले लड़ने का निर्णय लिया। प्रतिवर्ष कारगिल विजय दिवस 26 जुलाई को मनाया जाता है। भारत ने 1972 के शिमला समझौते के तहत निश्चित अपने सारे क्षेत्र वापिस ले लिए। विश्व समुदाय ने पाकिस्तान द्वारा अपनी पैरा मिलिट्री फोर्स तथा विद्रोहियों द्वारा लाइन ऑफ कंट्रोल को पार करके युद्ध भड़काने की आलोचना की। पाकिस्तान ने विश्व समुदाय को इसका औचित्य बताने का प्रयास किया परंतु वैश्विक स्तर पर इसके राजनयिक रवैये को बहुत ही कम साथ मिला।

क्रियाकलाप 20.1

संयुक्त जिहाद परिषद के बारे में इंटरनेट पर खोजें और एक लेख लिखें।

20.3 कारगिल संघर्ष में भारतीय मीडिया का योगदान

कारगिल संघर्ष के दौरान टीवी पर युद्ध की तस्वीरें और युद्ध की कहानियां प्रसारित होती थी। कुछ वेबसाइट्स पर भी सामान्य जन को युद्ध के बारे में जानकारी मिलती थी। यह युद्ध दक्षिण एशिया का पहला सीधा प्रसारित युद्ध था जिसमें मीडिया ने पूर्ण सहयोग दिया। अखबार और टीवी चैनलों को भी कारगिल जाने की अनुमति दे दी गई ताकि वे युद्ध का सीधा प्रसारण कर सकें। मीडिया से संबंधित कुछ अन्य गतिविधियां अधोलिखित हैं जिन्हें भारत सरकार ने अपनाया।

(क) भारतीय सरकार ने कुछ समय के लिए पाकिस्तान से जुड़े अनेक चैनल पीटीवी और वेबसाइट, उनके अखबार डॉन पर प्रतिबंध लगा दिया। इसके जवाब में पाकिस्तान ने भारत पर मीडिया की आजादी छीनने का आरोप लगाया। भारतीय मीडिया ने कहा कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उठाया गया आवश्यक कदम है।

(ख) भारतीय मीडिया की खबरें विदेशी अखबारों जैसे द टाइम्स और वाशिंगटन पोस्ट में छपने लगी। इससे विश्व को पाकिस्तान द्वारा आतंकवादियों को दी जा रही मदद का भी खुलासा प्रकाशित हुआ।

मीडिया द्वारा संघर्ष को कवर करने में भारतीय मीडिया ने बाजी मार ली। हमारे चैनल संघर्ष को इस प्रकार दिखाते थे जिस प्रकार खाड़ी युद्ध के समय, सीएनएन (CNN), न्यूज चैनल दिखाता था। इसका कारण था कि मीडिया को युद्ध का सीधा प्रसारण दिखाने की अनुमति दे दी गई। भारत में प्रिंट के अलावा प्राइवेट इलेक्ट्रानिक (Electronic) मीडिया ज्यादा है। इस

मीडिया में प्राइवेट चैनलों की संख्या में भी बहुत है। पाकिस्तानी पत्रकारों ने कराची में हुए एक सेमिनार में माना कि भारतीय सरकार अपने मीडिया और लोगों को विश्वास में लेने में सफल रही है। कुछ विश्लेषकों के अनुसार भारतीय मीडिया संख्या और गुणवत्ता में आगे था और कारगिल संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया। इसी से भारतीय सेना का मनोबल बढ़ गया।

20.4 कारगिल पुर्ननिरीक्षण समिति (Kargil Review Committee)

युद्ध समाप्त होने पर भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने घुसपैठियों की खबर न लग पाने के कारणों की जांच के आदेश दिए। इस समिति का उद्देश्य सेना की चूक और सुधारों की आवश्यकता, का पता लगाना था। इस कमेटी में के. सुब्रहणयम (अध्यक्ष), लेफ्टिनेंट जनरल (रिटायर्ड) के.के. हजारी, वी.जी. वर्गीस और सतीश चंद्र (सचिव, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय - NSCS - National Security Council Secretariat) समिति के सदस्य सचिव थे। समिति की जांच व निष्कर्ष मुख्यत: सरकारी प्रपत्रों, प्रमाणिक रिकार्ड और दस्तावेजों की फोटोकॉपियों पर आधारित है। यह जाँच रिपोर्ट इस बात पर निर्भर नहीं है कि कारगिल में क्या हुआ अपितु ऐसे कौन से कदम उठाए जाएँ जिससे भविष्य में कारगिल संघर्ष जैसी स्थिति दुबारा उत्पन्न न हो। इस रिपोर्ट में हमारे सुरक्षा तंत्र को मजबूत और पुन: संरचना का सुझाव दिया गया।

आप जानते हैं कि भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात् कितने युद्ध लड़े हैं। इन युद्धों के अलावा भी भारतीय सेना ने अनेक स्थानों पर अपने कौशल का प्रदर्शन किया है। सियाचिन ग्लेशियर पर अत्यधिक ठंड व अत्यधिक ऊँचाई होने के बाद भी हमारी सेना ने कब्जा किया क्योंकि पाकिस्तानी फौज उस पर गैर-कानूनी तरीके से कब्जा करना चाहती थी। हमारी सेना ने 1987 में श्रीलंका सरकार की लिट्टे के विरुद्ध संघर्ष में साथ दिया। दोनों जगह हमारी सेना ने शौर्य का प्रदर्शन किया। हमारे सैनिकों की बहादुरी के कारण उन्हें परमवीर चक्र दिया गया। आप इन सैनिकों के नाम ज्ञात कीजिए।

पाठगत प्रश्न 20.4

1. कारगिल युद्ध कितने समय चला?
2. युद्ध के समय भारत व पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कौन थे?
3. कारगिल युद्ध के समय संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति कौन था?

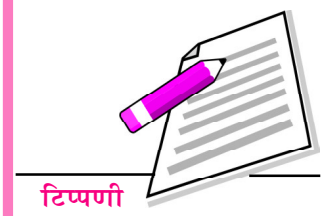

आपने क्या सीखा

- कारगिल युद्ध के कारण व उसका रणनीतिक महत्व।
- सेना की टुकड़ियों की युद्ध के मैदान में तैनाती, वायुसेना व नौसेना की भूमिका, भारतीय मीडिया का महत्व और अन्य देशों की तरफ से आई प्रतिक्रियाएँ।
- भारत व पाकिस्तान दोनों के द्वारा सीखे गए सबक।
- अंतत: कारगिल पुर्ननिरीक्षण समिति (Kargil Review Committee) का गठन।

पाठांत प्रश्न

1. 1999 में भारतीय सेना द्वारा चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' के बारे में एक नोट लिखिए।
2. कारगिल पुनर्निरीक्षण समिति (Kargil Review Committee) का वर्णन कीजिए।
3. कारगिल युद्ध में भारतीय मीडिया द्वारा निभा गई महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. कारगिल जम्मू व कश्मीर राज्य में स्थित है। यह स्थान श्रीनगर से 205 किलोमीटर दूर है। यह नियंत्रण रेखा के उत्तरी भाग के सामने है।
2. इस क्षेत्र की औसत ऊँचाई 16000 फीट और सर्दियों में तापमान -50^0C तक हो जाता है।
3. पाकिस्तान क मुख्य उद्देश्य भारतीय सेना को सियाचीन ग्लेशियर (हिमखंड) से हटाना था। वह इस राज्य में तनाव चाहता था। उनका लक्ष्य था कि इस तनाव से यह कश्मीर समस्या को विश्व पटल पर ले जाएगा।
4. पाकिस्तानी सेना और अर्द्धसैनिक बल।

20.2

1. मुश्कौन घाटी, द्रास के निकट मारपो, कारगिल के निकट काकसर, चोरबाटला सेक्टर और सियाचीन के दक्षिण भाग के टुरटोक सेक्टर।
2. ऑपरेशन विजय

20.3

1. मई 3 से मई 12, 1999
2. भारतीय सेना ने 155 mm बोर्फोस मध्यम तोपों और 105 mm बंदूकों का प्रयोग किया।
3. मिग-21, मिग-27, मिग-29 और मिराज 2000

20.4

1. 26 से 5 जुलाई 1999
2. अटल बिहारी वाजपेयी और नवाज शरीफ
3. बिल क्लिंटन